International Journal of Applied and Universal Research **E- ISSN No: 2395-0269**
Volume VII, Issue V, Sept-October 2020 Available online at: www.ijaur.com

लाकडॉउन 2020 में गोल्ड लोन की स्थिति

शबीना परवीन अंसारी
शोधार्थी वाणिज्य विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म.प्र.)

शोध साराँश–: वर्तमान संकट काल में जहाँ विश्व अर्थव्यवस्था पर भारी आघात पहँचा हैं, वहीं गोल्ड (सोना) अपने विभिन्न मूक गुणों से मरहम का काम कर रहा है अर्थात सोना गहरे संकट में काम आने वाली संपत्ति हैं। मौजूदा कठिन वैश्विक परिस्थितियों में यह धारणा एक बार फिर सही साबित हो रही है। 22 मार्च 2020 जैसे इस तारीख ने भारत के विकास के पन्ने पर एक तरफ सा रख दिया हो। इस तारीख में भारत ने लॉकडाउन में प्रवेश किया कारण को कोरोना वाइरस (Covid-19) महामारी एक तरफ काविड–19 महामारी और भू–राजनीतिक संकट के बीच सोना रिकार्ड कायम कर रहा है वहीं दूसरी तरफ जरूरतमंदो को को गोल्डलोन सरल सुविधा प्रदान कर रहा है।

मुख्यशब्दः गोल्ड लोन, लॉकडाउन, कोरोना वायरस एवं महामारी।

प्रस्तावना :–
गोल्ड लोन एक प्रकार का सिक्योर्ड लोन होता है, जहां सोने का इस्तेमाल लोन के बदले जमानत/सिक्योरिटी के तौर पर किया जाता है। ये सोना लोन का भुगतान होने जाने तक सुरक्षित लॉकर में रखा जाता है। इस प्रकार ये लोन को अपनी आर्थिक जरूरत को पूरा करने के लिए अनने सोने का उपयोग करने में सक्षम बनाता है। कई बार हमें इमरजेंसी में पैसों की जरूरत होती है, ऐसे में घर में रखा सोना काफी काम आ सकता है। मयण्णपुरम फाइनेंस, मुथुट फाइनेंस, आईआईएफएल जैसी कंपनियों गोल्ड लोन की सुविधा देती हैं सरकारी और निजी क्षेत्र के कुछ बैंक भी गोल्ड लोन देते हैं। इसमें सोने के गहनों, सिक्कों आदि गिरवी रखकर आप कैश ले सकते हैं। यह पैसा चुकाने के बाद गिरवी रखा सोना या ज्वेलरी ग्राहक को वापस कर दिया जाता है। लोन की रकम पर ब्याज देना पड़ता है। पर्सनल लोन के मुकाबले गोल्ड लोन में ब्याज दर कम होती है, पर्सनल लोन के मुकाबले गोल्ड लोन फटाफट मिल जाता है। आप जिस बैंक या नॉन–बैकिंग फाइनेंस कंपनी में गोल्ड लोन का आवेदन करते हैं वह पहले आपके सोने की गुणवत्ता की जांच करते हैं। सोना नकली होने की आशंका को देखते हुए फाइनेंस कंपनियों और बैंको ने सोने की गुणवत्ता जांचने के मानक काफी सख्त कर दिये हैं। सोने की गुणवत्ता के हिसाब से ही लोन की राशि तय होती है। आमतौर पर बैंक सोने के मूल्य के 75 फीसदी तक लोन दे देते हैं।

वर्ल्ड गोल्ड कांउसलिंग के अनुमान के मुताबिक भारतीय घरों में करीबी 22000–25000 टन सोना पड़ा हुआ है। इसमें से करीब 65% सोना ग्रामीण इलाकों के परिवारों के पास है'' (India time) विशेषज्ञों की माने तो शॉर्टटर्म जरूरतों को पूरा करने के लिये गोल्ड लोन सबसे सरल विकल्प है। खासकर जब दूसरे लैण्डर्स लोन देने में सावधानी बरत रहे हो।

विश्लेषणः–
गोल्ड लोन एक प्रकार का सियोर्ड लोन होता है, लोग अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिये , लोन अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिये , सोने के गहनों को गिर्वी रख लोन लेते हैं। सामान्यतः यह लाभ 18 वर्ष की आयु वाले किसी भी व्यक्ति को मिल सकता है। गोल्ड लोन कम ब्याज दर पर एवं न्यूनतम कागजी कार्यवाही के साथ प्राप्त हो जाता है।

गोल्ड लोन पर ब्याज दर व्यक्तिगत ऋण की तुलना में कम होता है। सामायतः गोल्ड लोन कंपनी प्रतिवर्ष 12–13% प्रतिर्ष की ब्याज दर से लोन देती है। लेकिन यह अलग अलग कंपनी अपना ब्याज दर एवं प्रोसेसिंग फीस अलग–अलग तय करती है। जैसे – HDFC " गोल्ड लोन 9.6%प्रतिवर्ष एवं 0 से 0.5 फीसदी प्रोसेसिंग फीस , मुथुट गोल्ड 12% प्रतिवर्ष 0.25% प्रोसेसिंग फीस ,मणप्पुरम गोल्ड लोन 14% प्रतिवर्ष 0.25% तक प्रोसेसिंग फीस ICICI बैंक गोल्ड लोन 10.5% 16.5 तक लोन ली गई राशि का 1% अमाउण्ट जबकि SBI गोल्ड लोन पर 7.50% है। " "

गोल्डलोन राशि का निर्धारण – ''लोन टू वैल्यू रेश्यो'' कितने गोल्ड पर कितना लोन मिलेगा इसको लेकर सरकार की नितियां बदलती रहती है पूर्व में 80% के मूल्य के हिसाब से लोन मिलता था फिर 75% हुआ परन्तु वर्तमान में कोरोना संकट के मद्देनजर RBI के आयरत 2020 के आदेशानुसार 'लोन टू वैल्यू रेश्यो'' को 75% से बढ़ाकर 90% कर दिया गया है। अर्थात सोने के गहनों ,सिक्कों की जितनी कीमत होगी उसका 90% लोन मिल सकता है मतलब 100 रूपये के गोल्ड वैल्यू के एवज में अब 75 रूपये की जगह 90 रूपये तक लोन प्राप्त हो सकेगा। लेकिन यह बढ़ोत्तरी 31 मार्च 2021 तक ही प्रभावी रहेगी जबकि यह लाभ सिर्फ बैंक से गोल्ड लेने पर प्राप्त होगा। NBFC अर्थात गैर बैंकिग वित्तीय संस्थान जैसे मुथुट गोल्ड फाइनेंस कम्पनी, मणप्पुरम गोल्ड फाइनेंस पर यह लाभ नहीं मिलेगा।

वैल्युएशन चार्ज– यह चार्ज एक प्रकार का हिडन चार्ज है कई बैंक एवं कम्पनियां इसे दशागत रूप से जबकि कई अदृश्यगत रूप से चार्ज करती है। यह सोने की गुणवत्ता जांचने में किये गये खर्च के नाम पर लिया जाता है।

फोरक्लोजर चार्ज – लेन को समय नियत समय अवधि से पूर्व बंद करने पर यह चार्ज चुकाना पड़ता है। गोल्ड की कीमत का निर्धारण – गोल्ड लोन प्राप्त करने के लिये आवेदन की तारीख से ठीक पिछले एक माह के गोल्ड की कीमत (22 कैरेट) के औसत प्राइम (इण्डिया बुलेटिन ज्वेलर्स एसोसिएशन के प्राइस को आधार माना जाता है) के आधार पर सोने के गहनों या सिक्को का वैल्यू तय हो जाता है। गोल्ड लोन प्रायः तीन महीने से लेकर तीन साल तक के लिये दिया जाता है।

गोल्ड लोन पर सावधानियां –

- किसी भी लोन की तरह गोल्ड री–पेमेंट को लेकर भी अनुशासन जरूरी हैं अगर निर्धारित तिथी पर भुगतान नहीं किया जाता है, तो कंपनी या बैंक 2–3% जुर्माना लगा सकता है।
- अगर गोल्ड लोन की किस्त (EMI) तीन से ज्यादा बकाया है तो नहीं भरने पर पेनाल्टी की रकम बढ़ जाती है।
- मुख्यतः प्रोसेसिंग फार्म में यह निर्देशित होती है कि 90 दिनों तक लोन की किस्त (EMI) न चुकाने पर ग्रेस पीरियड के बाद अपनी बकाया रकम की वसूली के लिये बैंक या कम्पनी गिर्वी रखा सोना बेंच सकती है।

गोल्ड लोन हेतु जरूरी दस्तावेज –

- आईडी कार्ड जरूरी है। इनमें पैन/पासपोर्ट/आधार/ड्राइविंग लाइसेंस या अन्य कोई पहचान पत्र दिया जा सकता है।
- एड्रेस प्रूफ के लिये– आधारकार्ड/बिजली का बिल/टेलीफोन बिल/ राशनकार्ड कोई भी एक , कई बैंक का कम्पनी हस्ताक्षर की जांच कि ड्राइविंग लाइसेंस आदि की भी मांग कर सकते हैं
- पासपोर्ट साइज फोटो ।

गोल्ड लोन के फायदे – सामन्यतः गोल्ड लोने की ब्याज दर पर्सनल लोन से कम होती है। चूंकि गारण्टी सोना होता है , इसलिये कम समय में यह एम्प्रूव हो जाता है। गोल्ड लोन के लिये किसी प्रमाण या अन्य गारण्टी की जरूरत नहीं होती। गोल्ड लोन में दूसरे लोन जैसे पर्सनल लोन या होम लोन की तरह समय से पहले चुकाने पर प्री–पेमेंट पेनाल्टी नहीं लगती है।

निष्कर्ष :–

कोरोना वायरस लॉकडाउन के दौरान गोल्ड लोन मे बेतहाशा वृद्धि हुई है। कारण लेंडर्स कोई जोखिम नहीं उठाना चाहता है इसलिए इस तरह के लोन को बढ़ावा मिल रहा है वहीं जरूरत मंद को अल्प समय में किसी अन्य गारण्टी व कम दस्तावेज के माध्यम से प्राप्त हो रहा है। अर्थात अल्प अवधि का यह बेहतर विकल्प है। '' मणप्पुरम फाइनेंस के मैनेजिंग डायरेक्टर (49) बी•पी• नंदकुमार के अनुसार''– आर्थिक गिरावट के दौर में बैंक और नॉन बैंकिंग कम्पनियों (NBFC) पर लोन के डिफाल्ट का जोखिम बढ़ जाता है इसलिये ऐसे में लोन देनी की प्रक्रिया धीमा कर देते हैं । जबकि गोल्ड लोन में अधिक माँग की सम्भावना है।''

संदर्भ :–

1. www.hindi.theprint.in
2. www.paisabazar.com
3. m.economictimes.com
4. economictimes.indiatimes.com
5. wwwhindifinnance.com

.

.